आरोह

हिंदी (आधार) की पाठ्यपुस्तक

(भाग-1)

कक्षा-11

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

आरोह

हिंदी (आधार) की पाठ्यपुस्तक

भाग 1

कक्षा-11

2018-19

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्राक्षण परिषद् द्वारा विकसित
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ द्वारा स्वीकृत

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING CHHATTISGARH

मूल्य - ₹ 65.00

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के निमित्त

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

संस्करण - 2018

आवरण पृष्ठ सज्जा
रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रणालय

....

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ....
द्धआवरण पृष्ठ 220 जी.एस.एम. एवं आंतरिक पृष्ठ 80 जी.एस.एम. कागज पर मुद्रितत्रः

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है, अवसर की असमानता को कम करना। शिक्षा को राष्ट्रीय आव"यकताओं के अनुरूप बनाना। मौजूदा आधारभूत सुविधाओं का बेहतर उपयोग करना। शिक्षा का स्तर सुधारना तथा शिक्षा में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को महत्व देना। इन्हीं आधारभूत तत्वों को धयान में रखते हुए शिक्षाविदों ने हर क्षेत्र् में जनहित के लिए शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम तैयार करने की कोशिश की है जिसे हर प्रांत द्धराज्यत्रः में लागू करके ही हम अपने देश में अपनी भावी पीढ़ी के लिए और उनके लाभ के लिए एक ही प्रकार की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं और उनको एक ही प्रकार की शिक्षा देकर उनका आपस में मुकाबला करवा के उनसे अपने देश, अपने राज्य के प्रति एक सकारात्मक सोच उत्पन्न कर शिक्षा का स्वप्न साकार कर सकते हैं। इन्हीं बातों को धयान में रखते हुए एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग के निर्णयानुसार अप्रैल 2018 से राज्य की उच्चतर माधयमिक कक्षा ग्यारहवीं हेतु लागू किया गया है।

विविधाता में एकता इस देश की परम्परा रही है। इस परम्परा को कायम रखते हुए शिक्षा के स्तर को उठाने के लिए तथा अन्य देशों के साथ विकास के आयाम पूरे करने के लिए छत्तीसगढ़ राज्य में अध्ययनरत उच्चतर माधयमिक शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण विकास के लिए प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रलय तथा भारत सरकार द्वारा समय-समय पर राज्यों को एक ही राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यक्रम स्वीकृत करने व एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों को प्रादेशों में लागू करने के लिए कहा जाता रहा है। उल्लेखनीय है कि 2017 से राष्ट्रीय स्तर पर मेडिकल प्रवेश परीक्षा का होना इसी बात का परिचायक है। भविष्य में तकनीकी परीक्षाओं के लिए भी ऐसा सोचा जा सकता है। पुनश्च कक्षा 12 वीं के बाद होने वाली अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन सी.बी.एस.ई. द्वारा किया जाता है तथा सी.बी.एस.ई. द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों से ही प्रश्न पूछे जाते हैं। अतः राष्ट्रीय स्तर पर ली जाने वाली परीक्षाओं की तैयारी के लिए एक जैसी सामग्री का होना आवश्यक है।

इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा विकसित कला, विज्ञान एवं वाणिज्य विषयक पाठ्यपुस्तकें, जिसे छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा नवीन आवरण पृष्ठ की डिजाइनिंग कर मुद्रित किया गया है, को छत्तीसगढ़ राज्य में पाठ्यपुस्तक के रुप में स्वीकार किया गया है। कक्षा बारहवीं में अधययनरत छात्रें के लिए स्वीकृत एन.सी.ई.आर.टी. की ये पुस्तकें छत्तीसगढ़ राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सि) होंगी। एन.सी.ई.आर. टी. के निदेशक तथा प्रकाशन विभाग के प्रति हम आभारी हैं जिन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य के लिए एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों के लिए त्वरित स्वीकृति व बहुमूल्य मार्ग निर्देशन देकर पुस्तक की गुणवत्ता विकास व सुधार हेतु आवश्यक सुझाव एवं सहयोग प्रदान किया है।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक, ज्ञानवर्धाक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धि स्तर की वृश) में सहायक सिद्ध) होगी, यद्यपि संवर्धान एवं परिष्करण की सम्भावनाएँ सदैव भविष्य के लिए संचित रहती हैं, फिर भी प्रकाशन एवं मुद्रण में निरन्तर अभिवृश) करने के प्रति निष्ठा एवं समर्पण के साथ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़ के छात्रें, अभिभावकों, शिक्षकों एवं शिक्षाविदों की टिप्पणियों तथा बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे छत्तीसगढ़ राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम लब्धाप्रतिष्ठित होने में हमारा लघु प्रयास सहायक सि) हो सके। समस्त छात्र-छात्रओं की उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधाान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, पूर्व प्रोफ़ेसर, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू. नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनूप कुमार, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
इन्द्रा सक्सेना, अध्यापिका, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
उषा शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
दिलीप सिंह, प्रोफेसर एवं कुल सचिव, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई
नीलकंठ कुमार, अध्यापक, नयी दिल्ली
रवीन्द्र त्रिपाठी, पत्रकार, नयी दिल्ली
रामबक्ष, प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली
संजीव कुमार, वरिष्ठ प्रवक्ता, देशबन्धु कालेज, नयी दिल्ली
समीर वरण नन्दी, अध्यापक, बी.एच.ई.एल. स्कूल, हरिद्वार

सदस्य-समन्वयक

संध्या सिंह, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में अकादमिक सहयोग के लिए हम विशेष आमंत्रित नीरजा रानी, पी.जी.टी., चंद्र आर्य विद्या मंदिर, नयी दिल्ली का आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तक में सम्मिलित करने के लिए जिन रचनाकारों / परिजनों / संस्थाओं / प्रकाशनों / पत्रिकाओं से अनुमति मिली है, उनमें कृष्णा सोबती, शेखर जोशी, मन्नू भंडारी, कृष्ण नाथ, त्रिलोचन, निर्मला पुतुल; सत्यजित राय और कृश्नचंदर के लिए राजकमल प्रकाशन; रज़ा के लिए अशोक वाजपेयी; पंत के लिए सुमिता पंत, रामनरेश त्रिपाठी के लिए जयंत कुमार त्रिपाठी; दुष्यंत कुमार के लिए राजेश्वरी त्यागी और पाश के लिए चमनलाल के कृतज्ञ हैं।

पुस्तक के निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के प्रभारी परशराम कौशिक, कॉपी एडीटर, राम जी तिवारी, प्रमोद कुमार तिवारी और यतेन्द्र कुमार यादव, प्रूफ रीडर, कमलेश कुमारी और इन्दुमति सरकार, डी.टी.पी. ऑपरेटर, जय प्रकाश राय और सचिन कुमार के हम आभारी हैं; लेखकों के चित्रों के लिए राजकमल प्रकाशन और संजय जोशी, साज सज्जा संबंधी चित्रों के लिए मड़ई और बाल भवन पत्रिका तथा पाठ्य सामग्री संबंधी सहयोग के लिए कथाचित्र पत्रिका के आभारी हैं।

यह पुस्तक

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-(2005) इस बात पर बल देती है कि शिक्षा बोझरहित और रुचिकर हो ताकि विद्यार्थी को खुद-ब-खुद पढ़ने का चस्का लग जाए। वर्तमान शैक्षिक सरोकारों के संदर्भ में यह एक चुनौती है। भाषा बच्चे की शिक्षा के लिए ज़मीन का काम करती है और साहित्य इस ज़मीन की सिंचाई का प्रमुख साधन है, अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की यह चुनौती भाषा-साहित्य की पुस्तकों के लिए कुछ अधिक है। इस पुस्तक के निर्माण में चयन और प्रस्तुति दोनों ही स्तरों पर यह कोशिश रही है कि हिंदी भाषा-साहित्य की शिक्षा अमूर्त न रह कर विद्यार्थी के जीवन, रुचि और अनुभव संसार का हिस्सा बन सके।
- यह पुस्तक ग्यारहवीं कक्षा में आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए बनाई गई है। युवावस्था की दहलीज़ पर कदम रखते ये किशोर विद्यार्थी जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की संभावनाएँ तलाश रहे होते हैं। हमारा प्रयास है कि भाषा साहित्य की यह पुस्तक संभावनाएँ तलाशते विद्यार्थी के लिए सोच-विचार, विमर्श और अभिव्यक्ति का पुख्ता आधार तैयार करने में मदद करे।
- आधुनिक हिंदी अपनी विकास यात्रा में विभिन्न आयाम और आकार लेती रही है। यह भी कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में जिस तरह से भावबोध का विकास हुआ है, उसी तरह हिंदी साहित्य का भी। इसके प्रतिबिंबन के लिए कालक्रम के विकास के अनुसार हिंदी साहित्य के विविध रूपों को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है ताकि विद्यार्थी इस पुस्तक के द्वारा अबतक के हिंदी के विकासक्रम से अपने को जोड़ सकें।
- यह प्रतिबिंबन केवल हिंदी तक सीमित न रहकर हिंदीतर भाषाओं के अनुवाद को भी समेटे हुए है। यह कोशिश एक ओर पूरे देश के सामाजिक पटल से जुड़ने का प्रयास है तो दूसरी ओर अनुवादों में विस्तार पाती हिंदी के सामर्थ्य की पहचान भी है।

- जब सामाजिक भावबोध बदलता है तो साहित्य नया आकार लेता है और जब नया साहित्य आता है तो भाषा भी नया रूप लेती है। कबीर ने कहा भी है 'भाखा बहता नीर', यानी भाषा स्थिर न होकर गतिशील है। इस पुस्तक में प्रारंभिक हिंदी से लेकर आज के समय में लिखी जाने वाली हिंदी के रूप भी मिल जाएँगे, इसके माध्यम से हमारा प्रयास यह भी है कि विद्यार्थी के भाषा संसार का विस्तार हो और वे जान सकें कि भाषा युग के अनुसार नया रूप और आकार ग्रहण करती है।
- आज से कुछ समय पहले तक साहित्य कुछ खास वर्गों तक सीमित था, लेखक और पाठक दोनों ही दृष्टियों से। वर्तमान समय में साहित्य के लेखक और पाठक की दुनिया का विस्तार हुआ है। समाज के वे हिस्से जो अब तक अनदेखे थे, उन्हें वाणी मिली है। अबतक वंचित रहे तबके का साहित्य के मंच पर रचनात्मक उदय हुआ है। स्त्री, दलित, आदिवासी लेखकों की ऊर्जा से साहित्य की भाषा को नया तेवर और अभिव्यक्ति का नया व्याकरण मिला है। हमारी कोशिश है कि युवा होते विद्यार्थियों का इस नयी अभिव्यक्ति से अपनापे का रिश्ता बन सके।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है- साहित्य इतिहास नहीं है साहित्य विज्ञान नहीं है, साहित्य गणित नहीं है, साहित्य दर्शन नहीं है लेकिन साहित्य में यह सब एक साथ मौजूद है। यों तो यह बात किसी भी भाषा के साहित्य पर लागू होती है, लेकिन अगर आज हम केवल हिंदी साहित्य को देखें तो हिंदी का पसरता संसार एक ओर कश्मीर से कन्याकुमारी को जोड़ता है तो दूसरी ओर पत्रकारिता, समाज विज्ञान, पर्यावरण, अर्थविज्ञान, कला, फ़िल्म आदि को समेटे है। हमारा प्रयास इन विभिन्न प्रयुक्तियों में विस्तार पाती हिंदी से विद्यार्थियों का संवाद कराना है।
- वर्तमान समय में जहाँ एक ओर कई विधाएँ एक दूसरे से मिलजुल गई हैं, वहीं दूसरी ओर कई नयी विधाओं का उदय भी हुआ है। रचनात्मक ऊर्जा किसी बंधन को स्वीकार नहीं करती। कई कालजयी रचनाएँ बंधन को तोड़ती हैं और नयी विधा को जन्म देती हैं। विद्यार्थी का ज्ञान केवल एक या दो विधाओं तक सीमित न रहे, बल्कि वह वर्तमान समय की समस्त विधाओं से यथासंभव परिचित हो

सके, इस दृष्टि से इस पुस्तक में कई नयी विधाओं को लिया गया है। शब्दचित्र, आत्मकथा और पटकथा ऐसी ही विधाएँ हैं।

- इस पुस्तक के दो खंड है- गद्य खंड और काव्य खंड, जिसमें गद्य और काव्य की विभिन्न छवियों को समाहित किया गया है। गद्य खंड में भारतेंदु युगीन (आधुनिक चेतना और नवजागरण की ऊर्जा संपन्न) हिंदी से लेकर वर्तमान हिंदी गद्य रचनाओं को चुना गया है। काव्य खंड में मुख्य रूप से खड़ी बोली की कविताओं को ही चुना गया है। चयन में तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं, एक- हिंदी कविता की पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए कबीर और मीरा के पदों का चयन। दो- आधुनिक हिंदी कविता की शैलियों और मुहावरों से परिचय के लिए रामनरेश त्रिपाठी से लेकर दुष्यंत तक की कविताओं की प्रस्तुति। तीन- अक्क महादेवी, पाश और निर्मला पुतुल की कविताओं के माध्यम से हिंदी कविता के समानांतर भारतीय भाषाओं की कविता की समझ पैदा करना। अभ्यासों में **पाठ के साथ और पाठ के आस-पास** की दुनिया और शब्दों के संदर्भगत अर्थ-छवियों के लिए **शब्द-छवि** को समाहित किया गया है, जो राष्ट्रीय पाठ्यचर्या का एक प्रमुख उद्देश्य है।
- शब्दों के साथ-साथ रंगों की एक बड़ी दुनिया अनदेखी रही है। लोकचित्र ऐसे ही रंगों की दुनिया है जहाँ आदिम संस्कृति अपनी पूरी ऊर्जा के साथ दिखाई पड़ती है। इस पुस्तक की साज-सज्जा में जगह-जगह लोकचित्र दिखाई पड़ेंगे, जिनकी आड़ी-तिरछी रेखाएँ हमें एक अलग दुनिया में ले जाती हैं। इसी के समानान्तर मुखावरण पर बहुरंगी संस्कृति को अभिव्यक्त करता सैयद हैदर रज़ा का चित्र **राजस्थान** तथा पृष्ठावरण पर ज्ञान के नए अंकुरण को संकेत करता **जर्मिनेशन** नामक चित्र दिया जा रहा है। चित्रों की इस दुनिया से गुज़रना अपनी जड़ों से जुड़ने का एहसास दे सकता है।
- विद्यार्थी, पुस्तक और अध्यापक के बीच एक संवादात्मक रिश्ता कायम हो, यह पुस्तक इस दिशा में एक प्रयास है। यह प्रयास निरंतर बेहतर होता रहे, इसके लिए सुझावों का स्वागत रहेगा।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषय-सूची

गद्य खंड

	आमुख		iii
	यह पुस्तक		v
1.	प्रेमचंद	नमक का दारोगा	3
2.	कृष्णा सोबती	मियाँ नसीरुद्दीन	20
3.	सत्यजित राय	अपू के साथ ढाई साल	31
4.	बालमुकुंद गुप्त	विदाई संभाषण	44
5.	शेखर जोशी	गलता लोहा	54
6.	कृष्णनाथ	स्पीति में बारिश	68
7.	मन्नू भंडारी	रजनी	79
8.	जवाहरलाल नेहरू	भारत-माता	100
9.	सैयद हैदर रज़ा	आत्मा का ताप	106

पद्य खंड

1.	कबीर	1. हम तौ एक एक करि जांनां।	115
		2. संतों देखत जग बौराना।	
2.	रामनरेश त्रिपाठी	पथिक	123
3.	सुमित्रानंदन पंत	वे आँखें	128

4.	भवानी प्रसाद मिश्र		घर की याद	134
5.	त्रिलोचन		चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती	141
7.	दुष्यंत कुमार		गज़ल	147
8.	अक्क महादेवी	1.	हे भूख! मत मचल	152
		2.	हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर	
9.	अवतार सिंह पाश		सबसे खतरनाक	156
10.	रैदास		रैदास के पद	162